श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्रीरामाष्टकम्

अथ श्रीरामाष्टकम्

भजे विशेषसुन्दरं(म्), समस्तपापखण्डनम् ।

स्वभक्तचित्तरञ्जनं(म्), सदैव राममद्वयम् ॥ 1॥

सदैव प्रार्थना करें श्री राम में ही चित धरें।

स्वरूप से जो मन हरे दुःख पाप सब टरे , राम नाम ले सदा॥1॥

जटाकलापशोभितं(म्), समस्तपापनाशकम् ।

स्वभक्तभीतिभङ्जनं(म्), भजेह राममद्वयम् ॥ 2॥

अलकों से रिझा रहे अखंड शोभा पा रहे।

पाप नाश कर रहे भक्त क्षोभ हर रहे , राम नाम ले सदा॥2॥

निजस्वरूपबोधकं(ङ्), कृपाकरं(म्) भवापहम् ।

समं(म्) शिवं(न्) निरञ्जनं(म्), भजेह राममद्वयम् ॥ 3॥

कृपा के जो समुद्र हैं स्वभाव से वो भद्र हैं।
समान रूप रुद्र हैं ये ऐसे रामचंद्र हैं, राम नाम ले सदा ॥3॥

सहप्रपञ्चकल्पितं(म्), ह्यनामरूपवास्तवम् ।
निराकृतिं(न्) निरामयं(म्), भजेह राममद्वयम् ॥4॥
ना कोई इनसा दूसरा श्री राम नाम है परा।
रच दई वसुंधरा रोग व्याधि दे हरा, राम नाम ले सदा ॥4॥

निष्प्रपञ्चनिर्विकल्प- निर्मलं(न्) निरामयम्।
चिदेकरूपसन्ततं(म्), भजेह राममद्वयम् ॥5॥
मन है जिसका निष्छल पवित्र ज्ञान निर्मल।
भक्त को जो दे बल सदैकरूप हर पल, राम नाम ले सदा॥5॥

भवाब्धिपोतरूपकं(म्), ह्यशेषदेहकल्पितम् ।
गुणाकरं(ङ्) कृपाकरं(म्), भजेह राममद्वयम् ॥6॥
वो ही भव से पार है जिसके राम आधार हैं।
सब सुखों का सार हैं सब दुखों की हार हैं, राम नाम ले सदा ॥6॥

महानवाक्यबोधकैर्- विराजमानवाक्पदैः ।

परब्रह्मव्यापकं(म्) , भजेह राममद्वयम् ॥7॥

जिनको वेद गा रहे महिमा जो सुना रहे।

ऐसे ब्रह्म रूप हैं ये सर्व देव भूप हैं, राम नाम ले सदा॥ 7॥

शिवप्रदं(म्) सुखप्रदं(म्), भवच्छिदं(म्) भ्रमापहम् ।

विराजमानदैशिकं(म्), भजेह राममद्वयम् ॥ 8॥

कल्याणकारी हैं सदा शांति- भक्ति के प्रदा।

कष्ट हो यदा- कदा देते मोद से लदा, राम नाम ले सदा॥8॥

रामाष्टकं(म्) पठति यः(स्) सुकरं(म्) सुपुण्यं(वँ),

व्यासेन भाषितमिदं(म्) शृणुते मनुष्यः ।

विद्यां(म्) श्रियं(वँ) विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिं(म्),

सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥ 9॥

जो मनुष्य वेदव्यास जी द्वारा रचित श्रीराम के इस स्तोत्र को, जो अत्यंत सुखदायक तथा पुण्यदायक है, पढ़ता या सुनता है, उसे ज्ञान, धन ,सुख और अनंत कीर्ति प्राप्त होती है, तथा देह छोड़ने के पश्चात उसे मोक्ष का लाभ मिलता है। ॥ 9॥

॥ इति श्रीव्यासविरचितं(म्) रामाष्टकं(म्) सम्पूर्णम् ॥

श्री राम स्तुति (तुलसीदास जी कृत)

श्री रामचन्द्र कृपालु भजुमन
हरण भवभय दारुणं ।
नव कंज लोचन कंज मुख
कर कंज पद कंजारुणं ॥1॥

कन्दर्प अगणित अमित छवि
नव नील नीरद सुन्दरं ।
पटपीत मानहुँ तडित रुचि शुचि
नोमि जनक सुतावरं ॥2॥

भजु दीनबन्धु दिनेश दानव
दैत्य वंश निकन्दनं ।
रघुनन्द आनन्द कन्द कोशल
चन्द दशरथ नन्दनं ॥3॥

शिर मुकुट कुंडल तिलक
चारु उदारु अङ्ग विभूषणं ।
आजानु भुज शर चाप धर
संग्राम जित खरदूषणं ॥4॥

इति वदति तुलसीदास शंकर
शेष मुनि मन रंजनं।
मम् हृदय कंज निवास कुरु
कामादि खलदल गंजनं ॥5॥

मन जाहि राच्यो मिलहि सो
वर सहज सुन्दर सांवरो ।
करुणा निधान सुजान शील
स्नेह जानत रावरो ॥6॥

एहि भांति गौरी असीस सुन सिय
सहित हिय हरषित अली।
तुलसी भवानिहि पूजी पुनि-पुनि
मुदित मन मन्दिर चली ॥7॥

एहि भांति गौरी असीस सुन सिय
सहित हिय हरषित अली।
तुलसी भवानिहि पूजी पुनि-पुनि
मुदित मन मन्दिर चली ॥8॥

श्रीराघवाष्टकम्

राघवं(ङ्) करुणाकरं मुनि-सेवितं सुर-वन्दितं(ञ्)
जानकीवदनारविन्द-दिवाकरं(ङ्) गुणभाजनम् ।
वालिसूनु-हितैषिणं हनुमत्प्रियं(ङ्) कमलेक्षणं(यँ)
यातुधान-भयंकरं प्रणमामि राघवकुञ्जरम् ॥ 1॥
राम राम नमोऽस्तु ते जय रामभद्र नमोऽस्तु ते
रामचन्द्र नमोऽस्तु ते जय राघवाय नमोऽस्तु ते ।

मैथिलीकुच-भूषणामल-नीलमौक्तिकमीश्वरं
रावणानुजपालनं रघुपुङ्गवं मम दैवतम् ।
नागरी-वनिताननांबुज-बोधनीय-कलेवरं
सूर्यवंशविवर्धनं प्रणमामि राघवकुञ्जरम् ॥ 2॥
राम राम नमोऽस्तु ते जय रामभद्र नमोऽस्तु ते
रामचन्द्र नमोऽस्तु ते जय राघवाय नमोऽस्तु ते ।

हेमकुण्डल-मण्डितामल-कण्ठदेशमरिन्दमं
शातकुंभ-मयूरनेत्र-विभूषणेन-विभूषितम् ।
चारुनूपुर-हार-कौस्तुभ-कर्णभूषण-भूषितं
भानुवंश-विवर्धनं प्रणमामि राघवकुञ्जरम् ॥ 3॥
राम राम नमोऽस्तु ते जय रामभद्र नमोऽस्तु ते

रामचन्द्र नमोऽस्तु ते जय राघवाय नमोऽस्तु ते ।

दण्डकाख्यवने रतामर-सिद्धयोगि-गणाश्रयं
शिष्टपालन-तत्परं(न्) धृतिशालिपार्थ-कृतस्तुतिम् ।
कुंभकर्ण-भुजाभुजंगविकर्तने सुविशारदं(लँ)
लक्ष्मणानुजवत्सलं प्रणमामि राघवकुञ्जरम् ॥ 4॥
राम राम नमोऽस्तु ते जय रामभद्र नमोऽस्तु ते
रामचन्द्र नमोऽस्तु ते जय राघवाय नमोऽस्तु ते ।

केतकी-करवीर-जाति-सुगन्धिमाल्य-सुशोभितं
श्रीधरं मिथिलात्मजाकुच- कुंकुमारुण-वक्षसम् ।
देवदेवमशेषभूत-मनोहरं(ञ्) जगतां पतिं(न्)
दासभूतभयापहं प्रणमामि राघवकुञ्जरम् ॥ 5॥
राम राम नमोऽस्तु ते जय रामभद्र नमोऽस्तु ते
रामचन्द्र नमोऽस्तु ते जय राघवाय नमोऽस्तु ते ।

यागदान-समाधि-होम-जपादिकर्मकरैर्द्विजैर्-
वेदपारगतैरहर्निशमादरेण सुपूजितम् ।
ताटकावधहेतुमंगदतात-वालि-निषूदनं
पैतृकोदितपालकं प्रणमामि राघवकुञ्जरम् ॥ 6॥
राम राम नमोऽस्तु ते जय रामभद्र नमोऽस्तु ते

रामचन्द्र नमोऽस्तु ते जय राघवाय नमोऽस्तु ते ।

लीलया खरदूषणादि-निशाचराशु-विनाशनं
रावणान्तकमच्युतं हरियूथकोटि-गणाश्रयम् ।
नीरजाननमंबुजांघ्रियुगं हरिं भुवनाश्रयं(न्)
देवकार्य-विचक्षणं प्रणमामि राघवकुञ्जरम् ॥ 7॥
राम राम नमोऽस्तु ते जय रामभद्र नमोऽस्तु ते
रामचन्द्र नमोऽस्तु ते जय राघवाय नमोऽस्तु ते ।

कौशिकेन सुशिक्षितास्त्र-कलापमायत-लोचनं(ञ्)
चारुहासमनाथ-बन्धुमशेषलोक-निवासिनम् ।
वासवादि-सुरारि-रावणशासनं(ञ्) च परांगतिं(न्)
नीलमेघ-निभाकृतिं प्रणमामि राघवकुञ्जरम् ॥ 8॥
राम राम नमोऽस्तु ते जय रामभद्र नमोऽस्तु ते
रामचन्द्र नमोऽस्तु ते जय राघवाय नमोऽस्तु ते ।

राघवाष्टकमिष्टसिद्धिदमच्युताश्रय-साधकं
मुक्ति-भुक्तिफलप्रदं(न्) धन-धान्य-सिद्धि-विवर्धनम् ।
रामचन्द्र-कृपाकटाक्षदमादरेण सदा जपेत्
रामचन्द्र-पदांबुजद्वय-सन्ततार्पित-मानसः ॥ 9॥

राम राम नमोऽस्तु ते जय रामभद्र नमोऽस्तु ते
रामचन्द्र नमोऽस्तु ते जय राघवाय नमोऽस्तु ते ।
देवदेव नमोऽस्तु ते जय देवराज नमोऽस्तु ते
वासुदेव नमोऽस्तु ते जय वीरराज नमोऽस्तु ते ॥ 10॥
॥ इति श्रीराघवाष्टकं संपूर्णम् ॥

नाम रामायण

जयत्याश्रितसंत्रासध्वान्तविध्वंसनोदयः ।
प्रभावान् सीतया देव्या परमव्योमभास्करः ॥

॥ बालकाण्डः ॥

शुद्धब्रह्मपरात्पर राम ॥ 1॥ कालात्मकपरमेश्वर राम ॥ 2॥
शेषतल्पसुखनिद्रित राम ॥ 3॥ ब्रह्माद्यामरप्रार्थित राम ॥ 4॥
चण्डकिरणकुलमण्डन राम ॥ 5॥ श्रीमद्दशरथ-नन्दन राम ॥ 6॥
कौसल्यासुखवर्धन राम ॥ 7॥ विश्वामित्रप्रियधन राम ॥ 8॥
घोरताटकाघातक राम ॥ 9॥ मारीचादिनिपातक राम ॥ 10॥
कौशिक-मख-संरक्षक राम ॥ 11॥ श्रीमदहल्योद्धारक राम ॥ 12॥
गौतममुनिसम्पूजित राम ॥ 13॥ सुरमुनिवरगणसंस्तुत राम ॥ 14॥
नाविकधावितमृदुपद राम ॥ 15॥ मिथिलापुरजनमोहक राम ॥ 16॥
विदेहमानसरञ्जक राम ॥ 17॥ त्र्यम्बक-कार्मुकभञ्जक राम ॥ 18॥
सीतार्पितवरमालिक राम ॥ 19॥ कृतवैवाहिककौतुक राम ॥ 20॥

भार्गवदर्प-विनाशक राम ॥ 21॥ श्रीमदयोध्यापालक राम ॥ 22॥

राम राम जय राजा राम। राम राम जय सीता राम ॥

राम राम जय राजा राम। राम राम जय सीता राम ॥ 2Times॥

॥ अयोध्याकाण्डः ॥

अगणितगुणगणभूषित राम ॥ 23॥ अवनी-तनयाकामित राम ॥ 24॥

राकाचन्द्रसमानन राम ॥ 25॥ पितृवाक्याश्रितकानन राम ॥ 26॥

प्रियगुहविनिवेदितपद राम ॥ 27॥ तत्क्षालितनिजमृदुपद राम ॥ 28॥

भरद्वाजमुखानन्दक राम ॥ 29॥ चित्रकूटाद्रिनिकेतन राम ॥ 30॥

दशरथसन्ततचिन्तित राम ॥ 31॥ कैकेयीतनयार्थित राम ॥ 32॥

विरचितनिजपितृकर्मक राम ॥ 33॥ भरतार्पितनिजपादुक राम ॥ 34॥

राम राम जय राजा राम । राम राम जय सीता राम ॥

॥ अरण्यकाण्डः ॥

दण्डक-वनजनपावन राम ॥ 35॥ दुष्टविराध-विनाशन राम ॥ 36॥

शरभङ्गसुतीक्ष्णार्चित राम ॥ 37॥ अगस्त्यानुग्रहवर्धित राम ॥ 38॥

गृध्राधिपसंसेवित राम ॥ 39॥ पञ्चवटीतटसुस्थित राम ॥ 40॥

शूर्पणखार्तिविधायक राम ॥ 41॥ खरदूषणमुखसूदक राम ॥ 42॥

सीताप्रियहरिणानुग राम ॥ 43॥ मारीचार्तिकृदाशुग राम ॥ 44॥

विनष्टसीतान्वेषक राम ॥ 45॥ गृध्राधिपगतिदायक राम ॥ 46॥

शबरीदत्तफलाशन राम ॥ 47॥ कबन्धबाहुच्छेदक राम ॥ 48॥

राम राम जय राजा राम । राम राम जय सीता राम ॥

॥ किष्किन्धाकाण्डः ॥

हनुमत्सेवितनिजपद राम ॥ 49॥ नतसुग्रीवाभीष्टद राम ॥ 50॥

गर्वितवालिसंहारक राम ॥ 51॥ वानरदूतप्रेषक राम ॥ 52॥

हितकरलक्ष्मणसंयुत राम ॥ 53॥

राम राम जय राजा राम ।राम राम जय सीता राम ॥

॥ सुन्दरकाण्डः ॥

कपिवरसन्ततसंस्मृत राम ॥ 54॥ तद्गतिविघ्नध्वंसक राम ॥ 55॥

सीताप्राणाधारक राम ॥ 56॥ दुष्टदशाननदूषित राम ॥ 57॥

शिष्टहनूमद्भूषित राम ॥ 58॥ सीतावेदितकाकावन राम ॥ 59॥

कृतचूडामणिदर्शन राम ॥ 60॥ कपिवरवचनाश्वासित राम ॥ 61॥

राम राम जय राजा राम । राम राम जय सीता राम ॥

॥ युद्धकाण्डः ॥

रावणनिधनप्रस्थित राम ॥ 62॥ वानरसैन्यसमावृत राम ॥ 63॥

शोषितसरिदीशार्थित राम ॥ 64॥ विभीषणाभयदायक राम ॥ 65॥

पर्वतसेतुनिबन्धक राम ॥ 66॥ कुम्भकर्णशिरच्छेदक राम ॥ 67॥

राक्षससङ्घविमर्दक राम ॥ 68॥ अहिमहिरावणचारण राम ॥ 69॥

संहृतदशमुखरावण राम ॥ 70॥ विधिभवमुखसुरसंस्तुत राम ॥ 71॥

खस्थितदशरथवीक्षित राम ॥ 72॥ सीतादर्शनमोदित राम ॥ 73॥

अभिषिक्तविभीषणनत राम ॥ 74॥ पुष्पकयानारोहण राम ॥ 75॥

भरद्वाजादिनिषेवण राम ॥ 76॥ भरतप्राणप्रियकर राम ॥ 77॥

साकेतपुरीभूषण राम ॥ 78॥ सकलस्वीयसमानत राम ॥ 79॥

रत्नलसत्पीठास्थित राम ॥ 80॥ पट्टाभिषेकालङ्कृत राम ॥ 81॥

पार्थिवकुलसम्मानित राम ॥ 82॥ विभीषणार्पितरङ्गक राम ॥ 83॥

कीशकुलानुग्रहकर राम ॥ 84॥ सकलजीवसंरक्षक राम ॥ 85॥

समस्तलोकाधारक राम ॥ 86॥

राम राम जय राजा राम । राम राम जय सीता राम ॥

॥ उत्तरकाण्डः ॥

आगतमुनिगणसंस्तुत राम ॥ 87॥ विश्रुतदशकण्ठोद्भव राम ॥ 88॥

सीतालिङ्गननिर्वृत राम ॥ 89॥ नीतिसुरक्षितजनपद राम ॥ 90॥

विपिनत्याजितजनकज राम ॥ 91॥ कारितलवणासुरवध राम ॥ 92॥

स्वर्गतशम्बुकसंस्तुत राम ॥ 93॥ स्वतनयकुशलवनन्दित राम ॥ 94॥

अश्वमेधक्रतुदीक्षित राम ॥ 95॥ कालावेदितसुरपद राम ॥ 96॥

आयोध्यकजनमुक्तिद राम ॥ 97॥ विधिमुखविबुधानन्दक राम ॥ 98॥

तेजोमयनिजरूपक राम ॥ 99॥ संसृतिबन्धविमोचक राम ॥ 100॥

धर्मस्थापनतत्पर राम ॥ 101॥ भक्तिपरायणमुक्तिद राम ॥ 102॥

सर्वचराचरपालक राम ॥ 103॥ सर्वभवामयवारक राम ॥ 104॥

वैकुण्ठालयसंस्थित राम ॥ 105॥ नित्यानन्दपदस्थित राम ॥ 106॥

राम् राम् जय राजा राम ॥ 107॥ राम् राम् जय सीता राम ॥ 108॥

राम राम जय राजा राम । राम राम जय सीता राम ॥

श्री राम रक्षा स्तोत्र

नीलांबुज-श्यामल कोमलाङ्गम्, सीता-समारोपित वामभागम्।

पाणौ महासायक चारुचापं(न्), नमामि रामम् रघुवंशनाथम्।।

श्री गणेशाय नमः

विनियोगः –

ॐ अस्य श्री रामरक्षास्तोत्रमन्त्रस्य बुधकौशिक ऋषिः,

श्री सीतारामचन्द्रोदेवता,

अनुष्टुप् छन्दः

सीताशक्तिः

श्रीमद्हनुमान कीलकम्

श्रीरामचन्द्रप्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।।

॥अथ ध्यानम् ॥

ध्यायेदाजानुबाहुं(न्) धृतशरधनुषं(म्) बद्धपद्मासनस्थं(म्)

पीतं(वँ) वासोवसानं(न्) नवकमलदलस्पर्धिनेत्रं(म्) प्रसन्नम् ।

वामाङ्कारूढसीता मुखकमलमिलल्लोचनं(न्) नीरदाभं(न्)

नानालङ्कारदीप्तं(न्) दधतमुरुजटामण्डनं (म्) रामचंद्रम् ॥

॥ इति ध्यानम् ॥

चरितं(म्) रघुनाथस्य, शतकोटिप्रविस्तरम् ।

एकैकमक्षरं(म्) पुंसां(म्), महापातकनाशनम् ॥1॥

ध्यात्वा नीलोत्पलश्यामं(म्), रामं(म्) राजीवलोचनम् ।

जानकीलक्ष्मणोपेतं(ञ्), जटामुकुटमण्डितम् ॥2॥

सासितूणधनुर्बाण-पाणिं(न्) नक्तं(ञ्) चरान्तकम् ।

स्वलीलया जगत्त्रातु- माविर्भूतमजं(वँ) विभुम् ॥3॥

रामरक्षां(म्) पठेत्प्राज्ञः(फ्), पापघ्नीं(म्) सर्वकामदाम् ।

शिरो मे राघवः(फ्) पातु, भालं(न्) दशरथात्मजः॥4॥

कौसल्येयो दृशौ पातु, विश्वामित्रप्रियः(श्) श्रुती ।

घ्राणं(म्) पातु मखत्राता , मुखं(म्) सौमित्रिवत्सलः ॥5॥

जिह्वां(वँ) विद्यानिधिः(फ्) पातु, कण्ठं(म्) भरतवंदितः ।

स्कन्धौ दिव्यायुधः(फ्) पातु, भुजौ भग्नेशकार्मुकः ॥6॥

करौ सीतापतिः(फ्) पातु , हृदयं(ञ्) जामदग्न्यजित् ।
मध्यं(म्) पातु खरध्वंसी, नाभिं(ञ्) जाम्बवदाश्रयः ॥7॥

सुग्रीवेशः(ख्) कटी पातु, सक्थिनी हनुमत्प्रभुः ।
ऊरू रघूत्तमः(फ्) पातु, रक्षः(ख्)कुलविनाशकृत् ॥8॥

जानुनी सेतुकृत्पातु , जङ्घे दशमुखान्तकः ।
पादौ विभीषणश्रीदः(फ्), पातु रामोऽखिलं(वँ) वपुः ॥9॥

एतां(म्) रामबलोपेतां(म्), रक्षां(यँ) यः(स्) सुकृती पठेत्।
स चिरायुः(स्) सुखी पुत्री, विजयी विनयी भवेत् ॥10॥

पातालभूतलव्योम- चारिणश्छद्मचारिणः ।
न द्रष्टुमपि शक्तास्ते, रक्षितं(म्) रामनामभिः ॥11॥

रामेति रामभद्रेति, रामचंद्रेति वा स्मरन् ।
नरो न लिप्यते पापैर्- भुक्तिं(म्) मुक्तिं(ञ्) च विन्दति ॥12॥

जगज्जैत्रैकमन्त्रेण, रामनाम्नाभिरक्षितम् ।

यः(ख्) कण्ठे धारयेत्तस्य, करस्थाः(स्) सर्वसिद्धयः ॥13॥

वज्रपं(ञ्)जरनामेदं(यँ), यो रामकवचं(म्) स्मरेत् ।
अव्याहताज्ञः(स्) सर्वत्र, लभते जयमङ्गलम्। ॥14॥

आदिष्टवान्यथा स्वप्ने, रामरक्षामिमां(म्) हरः ।
तथा लिखितवान् प्रातः(फ्), प्रबुद्धो बुधकौशिकः ॥15॥

आरामः(ख्) कल्पवृक्षाणां(वँ), विरामः(स्) सकलापदाम् ।
अभिरामस्त्रिलोकानां(म्), रामः(श्) श्रीमान् स नः(फ्) प्रभुः ॥16॥

तरुणौ रूपसंपन्नौ, सुकुमारौ महाबलौ ।
पुण्डरीकविशालाक्षौ, चीरकृष्णाजिनाम्बरौ ॥17॥

फलमूलाशिनौ दान्तौ, तापसौ ब्रह्मचारिणौ ।
पुत्रौ दशरथस्यैतौ, भ्रातरौ रामलक्ष्मणौ ॥18॥

शरण्यौ सर्वसत्वानां(म्), श्रेष्ठौ सर्वधनुष्मताम् ।
रक्षः(ख्) कुलनिहन्तारौ, त्रायेतां(न्) नो रघूत्तमौ ॥19॥

आत्तसज्जधनुषा विषुस्पृशा वक्षया शुगनिषङ्ग संगिनौ ।
रक्षणाय मम रामलक्ष्मणा वग्रत:(फ्) पथि सदैव गच्छताम् ॥20॥

संनद्ध:(ख्) कवची खड्गी, चापबाणधरो युवा ।
गच्छन् मनोरथोऽस्माकं(म्), राम:(फ्) पातु सलक्ष्मण: ॥21॥

रामो दाशरथि:(श्) शूरो, लक्ष्मणानुचरो बली ।
काकुत्स्थ:(फ्) पुरुष:(फ्) पूर्ण:(ख्), कौसल्येयो रघूत्तम: ॥22॥

वेदान्तवेद्यो यज्ञेश:(फ्), पुराणपुरुषोत्तम: ।
जानकीवल्लभ:(श्) श्रीमा- नप्रमेय पराक्रम: ॥23॥

इत्येतानि जपेन्नित्यं(म्), मद्भक्त:(श्) श्रद्धयान्वित: ।
अश्वमेधाधिकं(म्) पुण्यं(म्), संप्राप्नोति न संशय: ॥24॥

रामं(न्) दूर्वादलश्यामं(म्), पद्माक्षं(म्) पीतवाससम् ।
स्तुवन्ति नामभिर्दिव्यैर् - न ते संसारिणो नरा: ॥25॥

रामं(लँ) लक्ष्मणपूर्वजं(म्) रघुवरं(म्), सीतापतिं(म्) सुन्दरं(ङ्)

काकुत्स्थं(ङ्) करुणार्णवं(ङ्) गुणनिधिं(वँ्), विप्रप्रियं(न्) धार्मिकम् ॥

राजेन्द्रं(म्) सत्यसंधं(न्) दशरथतनयं(म्), श्यामलं(म्) शान्तमूर्तिं(वँ्)
वन्दे लोकाभिरामं रघुकुलतिलकं राघवं रावणारिम् ॥26॥

रामाय रामभद्राय, रामचंद्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय, सीताया:(फ्) पतये नम: ॥27॥

श्रीराम राम रघुनन्दन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम ।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं भव राम राम ॥28॥

श्रीरामचन्द्रचरणौ मनसा स्मरामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ वचसा गृणामि ।
श्रीरामचन्द्रचरणौ शिरसा नमामि
श्रीरामचन्द्रचरणौ शरणं प्रपद्ये ॥29॥

श्रीराम जय राम जय जय राम

श्रीराम जय राम जय जय राम

माता रामो मत्पिता रामचंन्द्रः

स्वामी रामो मत्सखा रामचंद्रः ।

सर्वस्वं(म्) मे रामचन्द्रो दयालुर्-

नान्यं(ञ्) जाने नैव जाने न जाने ॥30॥

दक्षिणे लक्ष्मणो यस्य, वामे तु जनकात्मजा ।

पुरतो मारुतिर्यस्य, तं(वँ) वंदे रघुनन्दनम् ॥31॥

श्रीराम जय राम जय जय राम

श्रीराम जय राम जय जय राम

लोकाभिरामं(म्) रणरंगधीरं(म्), राजीवनेत्रं(म्) रघुवंशनाथम् ।

कारुण्यरूपं(ङ्) करुणाकरं तं(म्), श्रीरामचंद्रं शरणं(म्) प्रपद्ये॥32॥

मनोजवं(म्) मारुततुल्यवेगं(ञ्), जितेन्द्रियं(म्) बुद्धिमतां(वँ) वरिष्ठम् ।

वातात्मजं(वँ) वानरयूथमुख्यं(म्), श्रीरामदूतं(म्) शरणं(म्) प्रपद्ये॥33॥

कूजन्तं(म्) राम रामेति, मधुरं(म्) मधुराक्षरम् ।

आरुह्य कविताशाखां(वँ), वन्दे वाल्मीकिकोकिलम् ॥34॥

आपदामपहर्तारं(न्), दातारं(म्) सर्वसम्पदाम् ।
लोकाभिरामं(म्) श्रीरामं(म्), भूयो भूयो नमाम्यहम् ॥35॥

भर्जनं(म्) भवबीजाना- मर्जनं(म्) सुखसम्पदाम् ।
तर्जनं(यँ) यमदूतानां(म्), राम रामेति गर्जनम् ॥36॥

रामो राजमणिः(स्) सदा विजयते, रामं(म्) रमेशं(म्) भजे
रामेणाभिहता निशाचरचमू, रामाय तस्मै नमः ।
रामान्नास्ति परायणं(म्) परतरं(म्), रामस्य दासोऽस्म्यहं(म्)
रामे चित्तलयः(स्) सदा भवतु मे, भो राम मामुद्धर ॥37॥

राम रामेति रामेति, रमे रामे मनोरमे ।
सहस्रनाम तत्तुल्यं(म्), रामनाम वरानने ॥38॥
॥ इति श्री बुधकौशिकविरचितं(म्) श्रीरामरक्षास्तोत्रं(म्) सम्पूर्णम् ॥

।।श्रीः।।

श्रीरामभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम्

विशुद्धं(म्) परं(म्) सच्चिदानन्दरूपं(ङ्)
गुणाधारमाधारहीनं(वँ) वरेण्यम्।

महान्तं(वँ) विभान्तं(ङ्) गुहान्तं(ङ्) गुणान्तं(म्)

सुखान्तं(म्) स्वयं(न्)धाम रामं(म्) प्रपद्ये।।1।।

शिवं(न्) नित्यमेकं(वँ) विभुं(न्) तारकाख्यं(म्)

सुखाकारमाकारशून्यं(म्) सुमान्यम्।

महेशं(ङ्) कलेशं(म्) सुरेशं(म्) परेशं(न्)

नरेशं(न्) निरीशं(म्) महीशं(म्) प्रपद्ये।।2।।

यदावर्णयत्कर्णमूलेऽन्तकाले

शिवो राम रामेति रामेति काश्याम्।

तदेकं(म्) परं(न्) तारकब्रह्मरूपं(म्)

भजेऽहं(म्) भजेऽहं(म्) भजेऽहं(म्) भजेऽहम्।।3।।

महारत्नपीठे शुभे कल्पमूले

सुखासीनमादित्यकोटिप्रकाशम्।

सदा जानकीलक्ष्मणोपेतमेकं(म्)

सदा रामचन्द्रं(म्) भजेऽहं(म्) भजेऽहम्।।4।।

क्वणद्रत्नमञ्जीरपादारविन्दं(लँ)

लसन्मेखलाचारुपीताम्बराढ्यम्।

महारत्नहारोल्लसत्कौस्तुभाङ्गं(न्)

नदच्चञ्चरीमञ्जरीलोलमालम्।।5।।

लसच्चन्द्रिकास्मेरशोणाधराभं(म्)

समुद्यत्पतङ्गेन्दुकोटिप्रकाशम्।

नमद्ब्रह्मरुद्रादिकोटीररत्न-

स्फुरत्कान्तिनीराजनाराधिताङ्घ्रिम्।।6।।

पुरः(फ्) प्राञ्जलीनाञ्जनेयादिभक्तान्

स्वचिन्मुद्रया भद्रया बोधयन्तम्।

भजेऽहं(म्) भजेऽहं(म्) सदा रामचन्द्रं(न्)

त्वदन्यं(न्) न मन्ये न मन्ये न मन्ये।।7।।

यदा मत्समीपं(ङ्) कृतान्तः(स्) समेत्य

प्रचण्डप्रकोपैर्भटैर्भीषयेन्माम्।

तदाऽऽविष्करोषि त्वदीयं(म्) स्वरूपं(म्)

सदाऽऽपत्प्रणाशं(म्) सकोदण्डबाणम्।।8।।

निजे मानसे मन्दिरे सन्निधेहि

प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र।

ससौमित्रिणा कैकयीनन्दनेन

स्वशक्त्यानुभक्त्या च सं(म्)सेव्यमान।।9।।

स्वभक्ताग्रगण्यैः(ख्) कपीशैर्महीशै-

रनीकैरनेकैश्च राम प्रसीद।

नमस्ते नमोऽस्त्वीश राम प्रसीद

प्रशाधि प्रशाधि प्रकाशं(म्) प्रभो माम्।।10।।

त्वमेवासि दैवं(म्) परं(म्) मे यदेकं(म्)

सुचैतन्यमेतत्त्वदन्यं(न्) न मन्ये।

यतोऽभूदमेयं(वँ) वियद्वायुतेजो

जलोर्व्यादिकार्यं(ञ्) चरं(ञ्) चाचरं(ञ्) च।।11।।

नमः(स्) सच्चिदानन्दरूपाय तस्मै

नमो देवदेवाय रामाय तुभ्यम्।

नमो जानकीजीवितेशाय तुभ्यं(न्)

नमः(फ्) पुण्डरीकायताक्षाय तुभ्यम्।।12।।

नमो भक्तियुक्तानुरक्ताय तुभ्यं(न्)
नमः(फ्) पुण्यपुञ्जैकलभ्याय तुभ्यम्।
नमो वेदवेद्याय चाद्याय पुं(म्)से
नमः(स्) सुन्दरायेन्दिरावल्लभाय।।13।।

नमो विश्वकर्त्रे नमो विश्वहर्त्रे
नमो विश्वभोक्त्रे नमो विश्वमात्रे।
नमो विश्वनेत्रे नमो विश्वजेत्रे,
नमो विश्वपित्रे नमो विश्वमात्रे।।14।।

नमस्ते नमस्ते समस्तप्रपञ्च-
प्रभोगप्रयोगप्रमाणप्रवीण।
मदीयं(म्) मनस्त्वत्पदद्वन्द्वसेवां(वँ्),
विधातुं(म्) प्रवृत्तं(म्) सुचैतन्यसिद्धयै।।15।।

शिलापि त्वदङ्घ्रिक्षमासङ्गिरेणु,
प्रसादाद्धि चैतन्यमाधत्त राम।
नरस्त्वत्पदद्वन्द्वसेवाविधानात्-
सुचैतन्यमेतीति किं(ञ्) चित्रमत्र।।16।।

पवित्रं(ञ्) चरित्रं(वँ्) विचित्रं(न्) त्वदीयं(न्),
नरा ये स्मरन्त्यन्वहं(म्) रामचन्द्र।
भवन्तं(म्) भवान्तं(म्) भरन्तं(म्) भजन्तो,
लभन्ते कृतान्तं(न्) न पश्यन्त्यतोऽन्ते।।17।।

स पुण्यः(स्) स गण्यः(श्) शरण्यो ममायं(न्),
नरो वेद यो देवचूडामणिं(न्) त्वाम्।
सदाकारमेकं(ञ्) चिदानन्दरूपं(म्),
मनोवागगम्यं(म्) परं(न्) धाम राम।।18।।

प्रचण्डप्रतापप्रभावाभिभूत-
प्रभूतारिवीर प्रभो रामचन्द्र।
बलं(न्) ते कथं(वँ्) वर्ण्यतेऽतीव बाल्ये,
यतोऽखण्डि चण्डीशकोदण्डदण्डः।।19।।

दशग्रीवमुग्रं(म्) सपुत्रं(म्) समित्रं(म्),
सरिद्दुर्गमध्यस्थरक्षोगणेशम्।
भवन्तं(वँ्) विना राम वीरो नरो वा,
सुरो वामरो वा जयेत्कस्त्रिलोक्याम्।।20।।

सदा राम रामेति रामामृतं(न्) ते,

सदाराममानन्दनिष्यन्दकन्दम्।

पिबन्तं(न्) नमन्तं(म्) सुदन्तं(म्) हसन्तं(म्),

हनूमन्तमन्तर्भजे तं(न्) नितान्तम्।।21।।

सदा राम रामेति रामामृतं(न्) ते,

सदाराममानन्दनिष्यन्दकन्दम्।

पिबन्नन्वहं(न्) नन्वहं(न्) नैव मृत्योर्-

बिभेमि प्रसादादसादात्तवैव।।22।।

असीतासमेतैरकोदण्डभूषै-

रसौमित्रिवन्द्यैरचण्डप्रतापैः।

अलङ्केशकालैरसुग्रीवमित्रै-

ररामाभिधेयैरलं(न्) दैवतैर्नः।।23।।

अवीरासनस्थैरचिन्मुद्रिकाढ्यै-

रभक्ताञ्जनेयादितत्त्वप्रकाशैः।

अमन्दारमूलैरमन्दारमालै-

ररामाभिधेयैरलं(न्) दैवतैर्नः।।24।।

असिन्धुप्रकोपैरवन्द्यप्रतापै-

रबन्धुप्रयाणैरमन्दस्मिताढ्यैः।

अदण्डप्रवासैरखण्डप्रबोधै-

ररामाभिधेयैरलं(न्) दैवतैर्नः।।25।।

हरे राम सीतापते रावणारे,

खरारे मुरारेऽसुरारे परेति।

लपन्तं(न्) नयन्तं(म्) सदाकालमेवं(म्),

समालोकयालोकयाशेषबन्धो।।26।।

नमस्ते सुमित्रासुपुत्राभिवन्द्य,

नमस्ते सदा कैकयीनन्दनेड्य।

नमस्ते सदा वानराधीशवन्द्य,

नमस्ते नमस्ते सदा रामचन्द्र।।27।।

प्रसीद प्रसीद प्रचण्डप्रताप,

प्रसीद प्रसीद प्रचण्डारिकाल।

प्रसीद प्रसीद प्रपन्नानुकम्पिन्,

प्रसीद प्रसीद प्रभो रामचन्द्र।।28।।

भुजङ्गप्रयातं(म्) परं(वँ) वेदसारं(म्),

मुदा रामचन्द्रस्य भक्त्या च नित्यम्।

पठन्सन्ततं(ञ्) चिन्तयन्स्वान्तरङ्गे,

स एव स्वयं(म्) रामचन्द्रः(स्) स धन्यः।।29।।

इति श्रीमच्छंकरभगवत्पादविरचितम्

श्रीरामभुजङ्गप्रयातस्तोत्रम्सं(म्)पूर्णम्।।

श्री राम जन्म चौपाई (रामचरितमानस अंतर्गत)

प्रथम सोपान (बालकांड)

दोहा :

जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।

चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल॥190॥

चौपाई :

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता॥

मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक बिश्रामा॥1॥

सीतल मंद सुरभि बह बाऊ। हरषित सुर संतन मन चाऊ॥

बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा। स्रवहिं सकल सरिताऽमृतधारा॥2॥

सो अवसर बिरंचि जब जाना। चले सकल सुर साजि बिमाना॥

गगन बिमल संकुल सुर जूथा। गावहिं गुन गंधर्ब बरूथा॥3॥

बरषहिं सुमन सुअंजुलि साजी। गहगहि गगन दुंदुभी बाजी॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा। बहुबिधि लावहिं निज निज सेवा॥4॥

दोहा :

सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक बिश्राम॥191

छन्द :

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुजचारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी॥1॥

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता॥2॥

ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर मति थिर न रहै॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसुकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।

कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै॥3॥

माता पुनि बोली सो मति डोली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा॥4॥

दोहा :

बिप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार॥192॥

चौपाई :

सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी। संभ्रम चलि आईं सब रानी॥
हरषित जहँ तहँ धाईं दासी। आनँद मगन सकल पुरबासी॥1॥

दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहु ब्रह्मानंद समाना॥
परम प्रेम मन पुलक सरीरा। चाहत उठन करत मति धीरा॥2॥

जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरें गृह आवा प्रभु सोई॥
परमानंद पूरि मन राजा। कहा बोलाइ बजावहु बाजा॥3॥

गुर बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा। आए द्विजन सहित नृपद्वारा॥
अनुपम बालक देखेन्हि जाई। रूप रासि गुन कहि न सिराई॥4॥

दोहा :

नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह।
हाटक धेनु बसन मनि नृप बिप्रन्ह कहँ दीन्ह॥193॥

चौपाई :

ध्वज पताक तोरन पुर छावा। कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा॥
सुमनबृष्टि अकास तें होई। ब्रह्मानंद मगन सब लोई॥1॥

बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाईं। सहज सिंगार किएँ उठि धाईं॥
कनक कलस मंगल भरि थारा। गावत पैठहिं भूप दुआरा॥2॥

करि आरति नेवछावरि करहीं। बार बार सिसु चरनन्हि परहीं॥
मागध सूत बंदिगन गायक। पावन गुन गावहिं रघुनायक॥3॥

सर्बस दान दीन्ह सब काहू। जेहिं पावा राखा नहिं ताहू॥
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा। मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा॥4॥

दोहा :

गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमा कंद।
हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद॥194॥

श्री राम स्तुति

अहिल्या द्वारा- (बालकांड)

परसत पद पावन सोकनसावन प्रगट भई तपपुंज सही।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही॥

अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही॥

धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहुँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई।
अति निर्मल बानी अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई॥

मैं नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदायी।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिं आई॥

मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मैं माना।
देखेउँ भरि लोचन हरि भव मोचन इहइ लाभ संकर जाना॥

बिनती प्रभु मोरी मैं मति भोरी नाथ न मागउँ बर आना।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना॥

जेहिं पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी।

सोई पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी॥

एहि भाँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पति लोक अनंद भरी॥

अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल।
तुलसिदास सठ तेहि भजु छाड़ि कपट जंजाल॥

ब्रह्मा जी द्वारा – (बालकांड)

जय जय सुरनायक, जन सुखदायक, प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी, जय असुरारी, सिधुंसुता प्रिय कंता॥

पालन सुर धरनी, अद्भुत करनी, मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला, दीनदयाला, करउ अनुग्रह सोई॥

जय जय अबिनासी, सब घट बासी, ब्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं, चरित पुनीतं, माया रहित मुकुंदा॥

जेहि लागि बिरागी ,अति अनुरागी, बिगत मोह मुनिबृंदा।

निसि बासर ध्यावहिं, गुन गन गावहिं, जयति सच्चिदानंदा॥

जेहिं सृष्टि उपाई, त्रिबिध बनाई, संग सहाय न दूजा।
सो करउ अघारी ,चिंत हमारी, जानिअ भगति न पूजा॥

जो भव भय भंजन, मुनि मन रंजन, गंजन बिपति बरूथा।
मन बच क्रम बानी ,छाड़ि सयानी, सरन सकल सुरजूथा॥
सारद श्रुति सेषा, रिषय असेषा, जा कहुँ कोउ नहि जाना।
जेहि दीन पिआरे, बेद पुकारे, द्रवउ सो श्रीभगवाना॥

भव बारिधि मंदर, सब बिधि सुंदर, गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर, परम भयातुर, नमत नाथ पद कंजा॥

दोहा:

जानि सभय सुर भूमि सुनि, बचन समेत सनेह।
गगनगिरा गंभीर भइ, हरनि सोक संदेह।। 186।।

ऋषि अत्रि द्वारा (अरण्यकांड)

नमामि भक्त वत्सलं। कृपालु शील कोमलं॥
भजामि ते पदांबुजं। अकामिनां स्वधामदं॥1॥

निकाम श्याम सुंदरं। भवांबुनाथ मंदरं॥
प्रफुल्ल कंज लोचनं। मदादि दोष मोचनं॥2॥

प्रलंब बाहु विक्रमं। प्रभोऽप्रमेय वैभवं॥
निषंग चाप सायकं। धरं त्रिलोक नायकं॥3॥

दिनेश वंश मंडनं। महेश चाप खंडनं॥
मुनींद्र संत रंजनं। सुरारि वृंद भंजनं॥4॥

मनोज वैरि वंदितं। अजादि देव सेवितं॥
विशुद्ध बोध विग्रहं। समस्त दूषणापहं॥5॥

नमामि इंदिरा पतिं। सुखाकरं सतां गतिं॥
भजे सशक्ति सानुजं। शची पति प्रियानुजं॥6॥

त्वदंघ्रि मूल ये नराः। भजंति हीन मत्सराः॥
पतंति नो भवार्णवे। वितर्क वीचि संकुले॥7॥

विविक्त वासिनः सदा। भजंति मुक्तये मुदा॥

निरस्य इंद्रियादिकं। प्रयांतिते गतिं स्वकं॥8॥

तमेकमद्भुतं प्रभुं। निरीहमीश्वरं विभुं॥
जगद्गुरुं च शाश्वतं। तुरीयमेव केवलं॥9॥

भजामि भाव वल्लभं। कुयोगिनां सुदुर्लभं॥
स्वभक्त कल्प पादपं। समं सुसेव्यमन्वहं॥10॥

अनूप रूप भूपतिं। नतोऽहमुर्विजा पतिं॥
प्रसीद मे नमामि ते। पदाब्ज भक्ति देहि मे॥11॥

पठंति ये स्तवं इदं। नरादरेण ते पदं॥
व्रजंति नात्र संशयं। त्वदीय भक्ति संयुताः॥12॥

दोहा:

बिनती करि मुनि नाइ सिरु कह कर जोरि बहोरि।
चरन सरोरुह नाथ जनि कबहुँ तजै मति मोरि॥4॥

जटायु द्वारा (अरण्यकांड)

जय राम रूप अनूप निर्गुन सगुन गुन प्रेरक सही।
दससीस बाहु प्रचंड खंडन चंड सर मंडन मही॥

पाथोद गात सरोज मुख राजीव आयत लोचनं।

नित नौमि रामु कृपाल बाहु बिसाल भव भय मोचनं॥1॥

बलमप्रमेयमनादिमजमब्यक्तमेकमगोचरं।

गोबिंद गोपर द्वंद्वहर बिग्यानघन धरनीधरं॥

जे राम मंत्र जपंत संत अनंत जन मन रंजनं।

नित नौमि राम अकाम प्रिय कामादि खल दल गंजनं॥2॥

जेहि श्रुति निरंजन ब्रह्म ब्यापक बिरज अज कहि गावहीं।

करि ध्यान ग्यान बिराग जोग अनेक मुनि जेहि पावहीं॥

सो प्रगट करुना कंद सोभा बृंद अग जग मोहई।

मम हृदय पंकज भृंग अंग अनंग बहु छबि सोहई॥3॥

जो अगम सुगम सुभाव निर्मल असम सम सीतल सदा।

पस्यंति जं जोगी जतन करि करत मन गो बस सदा॥

सो राम रमा निवास संतत दास बस त्रिभुवन धनी।

मम उर बसउ सो समन संसृति जासु कीरति पावनी॥4॥

अबिरल भगति मागि बर गीध गयउ हरिधाम।

तेहि की क्रिया जथोचित निज कर कीन्ही राम॥

ब्रह्मा जी द्वारा (लंका काण्ड)

जय राम सदा सुख धाम हरे। रघुनायक सायक चाप धरे।
भव बारन दारन सिंह प्रभो। गुन सागर नागर नाथ बिभो॥1॥

तन काम अनेक अनूप छबी। गुन गावत सिद्ध मुनींद्र कबी।
जसु पावन रावन नाग महा। खगनाथ जथा करि कोप गहा॥2॥

जन रंजन भंजन सोक भयं। गत क्रोध सदा प्रभु बोधमयं।
अवतार उदार अपार गुनं। महि भार बिभंजन ग्यानघनं।।3।।

अज ब्यापकमेकमनादि सदा। करुनाकर राम नमामि मुदा।
रघुबंस बिभूषन दूषन हा। कृत भूप बिभीषन दीन रहा।।4।।

गुन ग्यान निधान अमान अजं। नित राम नमामि बिभुं बिरजं।
भुजदंड प्रचंड प्रताप बलं। खल बृंद निकंद महा कुसलं।।5।।

बिनु कारन दीन दयाल हितं। छबि धाम नमामि रमा सहितं।

भव तारन कारन काज परं। मन संभव दारुन दोष हरं।।6।।

सर चाप मनोहर त्रोन धरं। जलजारुन लोचन भूपबरं।
सुख मंदिर सुंदर श्रीरमनं। मद मार मुधा ममता समनं।।7।।

अनवद्य अखंड न गोचर गो। सब रूप सदा सब होइ न गो।
इति बेद बदंति न दंतकथा। रबि आतप भिन्नमभिन्न जथा।।8।।

कृतकृत्य बिभो सब बानर ए। निरखंति तनानन सादर ए।
धिग जीवन देव सरीर हरे। तव भक्ति बिना भव भूलि परे।।9।।

अब दीनदयाल दया करिऐ। मति मोरि बिभेदकरी हरिऐ।
जेहि ते बिपरीत क्रिया करिऐ। दु:ख सो सुख मानि सुखी चरिऐ।।10।।

खल खंडन मंडन रम्य छमा। पद पंकज सेवित संभु उमा।
नृप नायक दे बरदानमिदं। चरनांबुज प्रेमु सदा सुभदं।।11।।

दोहा:

बिनय कीन्ह चतुरानन प्रेम पुलक अति गात।
सोभासिंधु बिलोकत लोचन नहीं अघात।।111।।

इंद्रदेव कृत – (लंका कांड)

जय राम सोभा धाम। दायक प्रनत बिश्राम॥
धृत त्रोन बर सर चाप। भुजदंड प्रबल प्रताप।।1।।

जय दूषनारि खरारि। मर्दन निसाचर धारि॥
यह दुष्ट मारेउ नाथ। भए देव सकल नाथ।।2।।

जय हरन धरनी भार। महिमा उदार अपार॥
जय रावनारि कृपाल। किए जातुधान बिहाल।।3।।

लंकेस अति बल गर्ब। किए बस्य सुर गंधर्ब॥
मुनि सिद्ध नर खग नाग। हठि पंथ सब कें लाग।।4।।

परद्रोह रत अति दुष्ट। पायो सो फलु पापिष्ट॥
अब सुनहु दीन दयाल। राजीव नयन बिसाल।।5।।

मोहि रहा अति अभिमान। नहिं कोउ मोहि समान॥
अब देखि प्रभु पद कंज। गत मान प्रद दुःख पुंज।।6।।

कोउ ब्रह्म निर्गुन ध्याव। अब्यक्त जेहि श्रुति गाव॥

मोहि भाव कोसल भूप। श्रीराम सगुन सरूप।।7।।

बैदेहि अनुज समेत। मम हृदयँ करहु निकेत॥

मोहि जानिऐ निज दास। दे भक्ति रमानिवास।।8।।

दे भक्ति रमानिवास त्रास हरन सरन सुखदायकं।

सुख धाम राम नमामि काम अनेक छबि रघुनायकं।।9।।

सुर बृंद रंजन द्वंद भंजन मनुजतनु अतुलितबलं।

ब्रह्मादि संकर सेब्य राम नमामि करुना कोमलं।।10।।

दोहा:

अब करि कृपा बिलोकि मोहि आयसु देहु कृपाल।

काह करौं सुनि प्रिय बचन बोले दीनदयाल॥ 113॥

शिवजी द्वारा – (लंकाकाण्ड)

मामभिरक्षय रघुकुल नायक। धृत बर चाप रुचिर कर सायक॥

मोह महा घन पटल प्रभंजन। संसय बिपिन अनल सुर रंजन॥

अगुन सगुन गुन मंदिर सुंदर। भ्रम तम प्रबल प्रताप दिवाकर॥

काम क्रोध मद गज पंचानन। बसहु निरंतर जन मन कानन॥

बिषय मनोरथ पुंज कंज बन। प्रबल तुषार उदार पार मन॥

भव बारिधि मंदर परमं दर। बारय तारय संसृति दुस्तर॥

स्याम गात राजीव बिलोचन। दीन बंधु प्रनतारति मोचन॥

अनुज जानकी सहित निरंतर। बसहु राम नृप मम उर अंतर॥

मुनि रंजन महि मंडल मंडन। तुलसिदास प्रभु त्रास बिखंडन॥

नाथ जबहिं कोसलपुरीं होइहि तिलक तुम्हार।

कृपासिंधु मैं आउब देखन चरित उदार॥ 115॥

चारों वेदों द्वारा- (उत्तरकाण्ड)

जय सगुन निर्गुन रूप रूप अनूप भूप सिरोमने।

दसकंधरादि प्रचंड निसिचर प्रबल खल भुज बल हने॥

अवतार नर संसार भार बिभंजि दारुन दु:ख दहे।

जय प्रनतपाल दयाल प्रभु संजुक्त सक्ति नमामहे॥1॥

तव बिषम माया बस सुरासुर नाग नर अग जग हरे।

भव पंथ भ्रमत अमित दिवस निसि काल कर्म गुननि भरे॥

जे नाथ करि करुना बिलोकि त्रिबिधि दु:ख ते निर्बहे।

भव खेद छेदन दच्छ हम कहुँ रच्छ राम नमामहे॥2॥

जे ग्यान मान बिमत्त तव भव हरनि भक्ति न आदरी।
ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी॥
बिस्वास करि सब आस परिहरि दास तव जे होइ रहे।
जपि नाम तव बिनु श्रम तरहिं भव नाथ सो समरामहे॥3॥

जे चरन सिव अज पूज्य रज सुभ परसि मुनिपतिनी तरी।
नख निर्गता मुनि बंदिता त्रैलोक पावनि सुरसरी॥
ध्वज कुलिस अंकुस कंज जुत बन फिरत कंटक किन लहे।
पद कंज द्वंद मुकुंद राम रमेस नित्य भजामहे॥4॥

अब्यक्तमूलमनादि तरु त्वच चारि निगमागम भने।
षट कंध साखा पंच बीस अनेक पर्न सुमन घने॥
फल जुगल बिधि कटु मधुर बेलि अकेलि जेहि आश्रित रहे।
पल्लवत फूलत नवल नित संसार बिटप नमामहे॥5॥

जे ब्रह्म अजमद्वैतमनुभवगम्य मनपर ध्यावहीं।
ते कहहुँ जानहुँ नाथ हम तव सगुन जस नित गावहीं॥
करुनायतन प्रभु सदगुनाकर देव यह बर मागहीं।

मन बचन कर्म बिकार तजि तव चरन हम अनुरागहीं॥6॥

दोहा:

सब के देखत बेदन्ह बिनती कीन्हि उदार।

अंतर्धान भए पुनि गए ब्रह्म आगार॥13 क॥

बैनतेय सुनु संभु तब आए जहँ रघुबीर।

बिनय करत गदगद गिरा पूरित पुलक सरीर॥13 ख॥

शिवजी द्वारा- (उत्तरकाण्ड)

जय राम रमारमनं समनं। भवताप भयाकुल पाहि जनं॥

अवधेस सुरेस रमेस बिभो। सरनागत मागत पाहि प्रभो॥1॥

दससीस बिनासन बीस भुजा। कृत दूरि महा महि भूरि रुजा॥

रजनीचर बृंद पतंग रहे। सर पावक तेज प्रचंड दहे॥2॥

महि मंडल मंडन चारुतरं। धृत सायक चाप निषंग बरं।

मद मोह महा ममता रजनी। तम पुंज दिवाकर तेज अनी॥3॥

मनजात किरात निपात किए। मृग लोग कुभोग सरेन हिए॥

हति नाथ अनाथनि पाहि हरे। बिषया बन पावँर भूलि परे॥4॥

बहु रोग बियोगन्हि लोग हए। भवदंघ्रि निरादर के फल ए॥
भव सिंधु अगाध परे नर ते। पद पंकज प्रेम न जे करते॥5॥

अति दीन मलीन दुखी नितहीं। जिन्ह कें पद पंकज प्रीति नहीं॥
अवलंब भवंत कथा जिन्ह कें। प्रिय संत अनंत सदा तिन्ह कें॥6॥

नहिं राग न लोभ न मान सदा। तिन्ह कें सम बैभव वा बिपदा॥
एहि ते तव सेवक होत मुदा। मुनि त्यागत जोग भरोस सदा॥7॥

करि प्रेम निरंतर नेम लिएँ। पद पंकज सेवत सुद्ध हिएँ॥
सम मानि निरादर आदरही। सब संतु सुखी बिचरंति मही॥8॥

मुनि मानस पंकज भृंग भजे। रघुबीर महा रनधीर अजे॥
तव नाम जपामि नमामि हरी। भव रोग महागद मान अरी॥9॥

गुन सील कृपा परमायतनं। प्रनमामि निरंतर श्रीरमनं॥
रघुनंद निकंदय द्वंद्वघनं। महिपाल बिलोकय दीन जनं॥10॥

दोहा:

बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग।

पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥14 क॥

बरनि उमापति राम गुन हरषि गए कैलास।

तब प्रभु कपिन्ह दिवाए सब बिधि सुखप्रद बास॥14 ख॥

श्रीरामचंद्राष्टकम्

चिदाकारो धाता परमसुखद:(फ्) पावनतनुर्-

मुनीन्द्रैर्योगीन्द्रैर्यतिपतिसुरेन्द्रैर्हनुमता ।

सदा सेव्य:(फ्) पूर्णो जनकतनयांग सुरगुरु,

रमानाथो रामो रमतु मम चित्ते तु सततम् ॥1॥

मुकुन्दो गोविन्दो जनकतनयालालितपद:(फ्),

पदं प्राप्ता यस्याधमकुलभवा चापि शबरी ।

गिरातीतोऽगम्यो विमलधिषणैर्वेदवचसा ,

रमानाथो रामो रमतु मम चित्ते तु सततम् ॥2॥

धराधीशोऽधीश:(स्) सुरनरवराणां रघुपति:(ख्)

किरीटी केयूरी कनककपिश:(श्) शोभितवपु: ।

समासीन:(फ्) पीठे रविशतनिभे शांतमनसो,

रमानाथो रामो रमतु मम चित्ते तु सततम् ॥3॥

वरेण्य:(श्) शारण्य:(ख्) कपिपतिसखश्चान्तविधरो,
ललाटे काश्मीरो रुचिरगतिभंगं शशिमुख: ।
नराकारो रामो यतिपतिनुत:(स्) संसृतिहरो ।
रमानाथो रामो रमतु मम चित्ते तु सततम् ॥4॥

विरूपाक्ष:(ख्) काश्यामुपदिशति यन्नाम शिवदं,
सहस्रं(यँ) यन्नाम्नां पठति गिरिजा प्रत्युषसि वै ।
स्वलोके गायन्तीश्वरविधिमुखा यस्य चरितं,
रमानाथो रामो रमतु मम चित्ते तु सततम् ॥5॥

परो धीरोऽधीरोऽसुरकुलभवश्चासुरहर:(फ्),
परात्मा सर्वज्ञो नरसुरगणैर्गीतसुयशा: ।
अहल्याशापघ्न:(श्) शरकरऋजु:(ख्) कौशिकसखो ,
रमानाथो रामो रमतु मम चित्ते तु सततम् ॥6॥

ऋषिकेश:(श्) शौरिर्धरणिधरशायी मधुरिपु-
रुपेन्द्रो वैकुण्ठो गजरिपुहरस्तुष्टमनसा ।
बलिध्वंसी वीरो दशरथसुतो नीतिनिपुणो ,

रमानाथो रामो रमतु मम चित्ते तु सततम् ॥7॥

कवि:(स्) सौमित्रीड्य:(ख्) कपटमृगघाती वनचरो,

रणश्लाघी दान्तो धरणिभरहर्ता सुरनुत: ।

अमानी मानज्ञो निखिलजनपूज्यो हृदिशयो ,

रमानाथो रामो रमतु मम चित्ते तु सततम् ॥8॥

इदं रामस्तोत्रं(वँ) वरममरदासेन रचित-

मुष:काले भक्त्या यदि पठति यो भावसहितम् ।

मनुष्य:(स्) स क्षिप्रं(ञ्) जनिमृतिभयं(न्) तापजनकं,

परित्यज्य श्रेष्ठं रघुपतिपदं(यँ) याति शिवदम् ॥9॥

॥इति श्री रामचंद्राष्टकस्तोत्रं संपूर्णम्॥